Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

आद्य संस्कृताभिलेख "रुद्रदामन के गिरनार (जूनागढ़) प्रस्तराभिलेख" का साहित्यिक महत्व

डॉ. शैलजा रानी अग्निहोत्री

सह–आचार्य संस्कृत, सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर।

Article Info
Volume 5, Issue 1
Page Number : 201-206

Publication Issue :
January-February-2022

Article History
Accepted : 01 Feb 2022
Published : 10 Feb 2022

सारांश (Abstract) – अभिलेख अंकन की परम्परा बहुत प्राचीन समय से रही है; उपलब्ध पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक साक्ष्य इस बात की पुष्टि करते हैं। प्राचीनकाल में राजा–महाराजाओं द्वारा किसी महत्वपूर्ण घटना अथवा अपनी युद्ध विजय की चिरस्मृति हेतु एवं आत्मप्रशंसा में विभिन्न आधार वस्तुओं पर अभिलेख उत्कीर्ण कराए जाते थे। ये अभिलेख अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण होते थे। राजा रुद्रदामन का गिरिनगर अथवा गिरनार नामक स्थान पर एक प्रस्तर खण्ड पर उत्कीर्ण कराया गया प्रस्तराभिलेख विभिन्न दृष्टियों से अपना महत्व रखता है। संस्कृत देववाणी तथा अन्यान्य भाषाओं की जननी होने से अतिप्राचीन भाषा रही है। किन्तु अभिलेखों में इस भाषा का प्रयोग प्रथम शताब्दी से होने लगा, ऐसा ऐतिहासिक व साहित्यिक स्रोतों से ज्ञात होता है। रुद्रदामन का यह अभिलेख 150 ई. का है, जो कि संस्कृत गद्य शैली में उत्कीर्ण मिला है। हालाँकि संस्कृत का प्रचलन बहुत पहले से रहा है, परन्तु अभिलेख (शिला या प्रस्तर पर अभिलेख) लेखन में संस्कृत का सर्वप्रथम प्रयोग इसी अभिलेख में मिलता है। अतः यह संस्कृत भाषा में अंकित आद्य– प्रथम अभिलेख होने का गौरव रखता है। अभिलेख में निहित सामग्री का साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्व देखा जा सकता है। अभिलेख में काव्यशास्त्रीय तथा साहित्यिक सामग्री की प्रचुरता एवं उत्कृष्टता है। प्रस्तुत आलेख में इस प्रस्तराभिलेख का साहित्यिक दृष्टि से पर्यालोचन कर उसे विवेचित किया गया है।

प्रमुख शब्दावली – प्रस्तराभिलेख, प्रस्तरखण्ड, शिलालेख, शिलाखण्ड, आद्य संस्कृताभिलेख, उत्कीर्ण, संस्कृत भाषा, अभिलेख लेखन, लिपिक, जीर्णोद्धार, महाक्षत्रप रुद्रदामन, अलंकृत गद्यकाव्य, काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त, सुदर्शन झील, सामासिक शब्दावली गद्य–पद्यात्मक काव्य।

विषय–विवेचन – प्राचीन समय में आज की तरह कागज, टंकण, छपाई आदि की व्यवस्था नहीं थी; अतः अपनी बात की अभिव्यक्ति हेतु जब उसे लिखित रूप में सबके समक्ष प्रस्तुत करना होता था, अथवा सार्वजनिक करना होता था, तब लेखन हेतु विभिन्न आधारों, यथा– पत्थरों, शिलाखण्डों, देवालय या विभिन्न स्मारकों के स्तम्भों, स्तूपों, ताम्रपत्र, भूर्जपत्र अथवा मुद्राओं इत्यादि पर अंकन किए जाते थे। विभिन्न भूभागों पर शासन करने वाले राजा–महाराजा अपनी

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

विजय प्रशस्तियों, अपने राज्य अथवा शासन से सम्बन्धित विभिन्न घटनाओं और सूचना व आदेशों को इसी प्रकार अभिलेखों के रूप में कवियों, लेखकों अथवा लिपिकों से लिपिबद्ध कराया करते थे, जो कि प्रस्तरखण्डों या शिलाखण्डों, प्रासादों, देवालयों, दुर्गों अथवा ऐतिहासिक या धार्मिक इमारतों के स्तम्भों, स्तूपों आदि पर उत्कीर्ण कराए जाते थे, ताकि वे अभिलेख चिरस्थायी बने रहें एवं उन राजा–महाराजा अथवा शासकों के राज्य, शासन व्यवस्था, विजय अभियान एवं प्रशस्तियों इत्यादि की चिरस्मृति लोगों में बनी रहे। अभिलेखों की परम्परा में बहुत से अभिलेख प्राचीन समय में लिखे गए। उपलब्ध विभिन्न अभिलेखों के पर्यालोचन से ज्ञात होता है कि इनमें विभिन्न भाषाओं तथा विभिन्न आधारों का प्रयोग होता था। यथा– बौद्ध धर्म विषयक सामग्री वाले एवं सम्राट अशोक के द्वारा उत्कीर्ण कराए गए अभिलेख तत्काल में प्रचलित मगध की भाषा 'मागधी' अथवा 'पालि' भाषा में मिलते हैं, तो वहीं अशोक के बाद दक्षिण भारत के सातवाहन राजाओं द्वारा उत्कीर्ण अभिलेखों की भाषा प्राकृत रही है।[1] प्रथम शताब्दी से संस्कृत भाषा अधिक जनप्रचलित होने के कारण इस समय के अभिलेखों में संस्कृत भाषा का प्रयोग होने लगा। वैसे देश–काल, परिवेश अथवा समय, क्षेत्र या प्रान्तानुसार भाषाएँ परिवर्तित होती रहने से उसका प्रभाव अभिलेखों पर पड़ता देखा गया है। क्योंकि अभिलेख उसी भाषा में उत्कीर्ण कराए जाते थे, जो भाषा जनप्रचलित होती थी।

शकक्षत्रप महाराजा रुद्रदामन द्वारा अपने शासनकाल में सौराष्ट्र प्रान्तस्थ गिरिनगर/गिरनार नामक स्थान की पहाड़ियाँ, जो अब गुजरात राज्य के जूनागढ़ जिले में स्थित हैं, वहाँ एक पर्वत प्रान्त के प्रस्तरखण्ड पर जो अभिलेख उत्कीर्ण कराया गया था, वही 'रुद्रदामन के गिरिनगर/गिरनार प्रस्तराभिलेख' नाम से जाना जाता है।[2] इसी पत्थर खण्ड पर सम्राट अशोक के धर्मोपदेश उत्कीर्ण हैं और इसी के निचले भाग पर महाक्षत्रप रुद्रदामन् का यह अभिलेख संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध है। हालाँकि संस्कृत भाषा में लेखन की परम्परा अतिप्राचीन काल से प्रचलित थी, परन्तु अभिलेख में लिपिबद्ध संस्कृत का प्रथम उपलब्ध साक्ष्य इसी गिरनार के अभिलेख के रूप में प्राप्त होने से इस प्रस्तराभिलेख को आद्य संस्कृत अभिलेख[3] – शिलालेख होने का गौरव प्राप्त है। प्रस्तर शिला पर उत्कीर्ण होने के कारण यह प्रस्तराभिलेख अथवा शिलालेख कहलाता है। अभिलेख अलंकृत संस्कृत गद्य शैली में अंकित है।

अभिलेख का समय शक संवत् 72 तदनुसार 150 ई. का है। अभिलेख में उल्लेखित **"राज्ञो महाक्षत्रपस्य गुरुभिरभ्यस्तनाम्नो रुद्रदाम्नो वर्षे द्विसप्ततितमे ७२ मार्गशीर्ष .....।"**[4] के आधार पर इतिहासविदों ने इसका समय द्वितीय शताब्दी का मध्यभाग ही माना है। शक महाक्षत्रप रुद्रदामन के द्वारा यह अभिलेख अपने राज्य में सुदर्शन झील के जीर्णोद्धार कराने की घटना को लेकर लिखवाया गया था। हालाँकि अभिलेख के लेखन कर्ता लिपिक का नाम इसमें अंकित नहीं है, तथापि अभिलेख के पर्यालोचन से इतना स्पष्टतः ज्ञात होता है कि इस अभिलेख का लिपिक भले ही अज्ञात है, परन्तु वह संस्कृत का अच्छा विद्वान् अथवा संस्कृत सुविज्ञ किंवा संस्कृतज्ञ रहा है। क्योंकि इस गद्यात्मक अभिलेख में जो अलंकृत गद्ययुक्त काव्यात्मक शैली अपनाई गई है, वह संस्कृत से अनभिज्ञ अथवा किसी ऐसे साधारण व्यक्ति की नहीं हो सकती, जो कि कवि अथवा संस्कृत का विद्वान् न हो। एक छोटे से गद्यालेख में लेखक ने अपने कवित्व एवं काव्यशास्त्रीय प्रतिभा का जो प्रकटीकरण किया है, वह निःसन्देह इस अभिलेख को साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट बनाता है एवं तत्काल में गद्यकाव्य के विकास और उत्कर्ष को सूचित

करता है। केवल अभिलेख का लिपिक ही नहीं, वरन् स्वयं महाक्षत्रप रुद्रदामन भी संस्कृत का अच्छा विद्वान् एवं कवि था, इस तथ्य की पुष्टि भी यह अभिलेख करता है। क्योंकि अभिलेख में स्पष्टतः उल्लेख मिलता है कि स्वंय 'महाक्षत्रप' उपाधिधारी रुद्रदामन काव्य के स्फुट, मधुर, चित्र आदि गुणों, विभिन्न अलंकारों सहित गद्यपद्यात्मक काव्य–रचना में निपुण था– **"स्फुटलघुमधुरचित्रकान्तशब्दसमयोदारालङ्कृतगद्यपद्य..... स्वयमधिगतमहा क्षत्रपनाम्ना नरेन्द्र.....।।"**[5] इस प्रकार यहाँ लिपिक ने रुद्रदामन को उत्तम काव्य–रचना के लिए आवश्यक समस्त काव्यगुणों, अलंकारों एवं काव्य शैलियों– गद्य व पद्य में निपुण बतलाया है।

अभिलेख में लिपिक ने जो अलंकृत गद्य शैली प्रयुक्त की है, उसमें काव्योचित गुण, अलंकार, रीति, शैली, समास इत्यादि सभी का सन्निवेश किया है। यह इस अभिलेख को साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाता है तथा अत्यन्त लघु कलेवर वाले आलेख को लघु गद्यकाव्य होने का गौरव प्रदान करता है। अपने काव्यगत वैशिष्ट्य एवं उत्कृष्टता के कारण ही यह संस्कृत अभिलेख परवर्ती श्रेष्ठ गद्यकवियों– दण्डी, सुबन्धु, बाण आदि के काव्यों के समकक्ष अपना प्रशस्त स्थान बनाता है। क्योंकि अलंकृत व सफल गद्य के प्रायः समस्त गुण व विशेषताएँ अभिलेख में निहित हैं। अभिलेख की भाषा प्रवाह शील है तथा प्रधानतः वैदर्भी रीति की विशेषताएँ समाविष्ट हैं। समासों का बाहुल्य होने के बावजूद समासपद छोटे–छोटे एवं प्रवाहपूर्ण हैं, जो कि अर्थाभिव्यक्ति में कहीं भी बाधक नहीं बने हुए हैं। समस्त अभिलेख के अवलोकन से यह बात स्पष्टतः ज्ञात होती है। परन्तु कवि का आग्रह या हठ केवल वैदर्भी रीति युक्त पदरचना का ही नहीं रहा है, वरन् स्व–अभिप्राय अथवा विषयाभिव्यक्ति के उद्देश्यानुसार जब जैसी भाषा–शैली अथवा गुण–रीति–अलंकारों इत्यादि की आवश्यकता प्रतीत हुई, उस सबका सन्निवेश अभिलेख में उसने किया है। यथा– वर्ण्यविषय के अनुकूल अवसरानुसार ओजयुक्त भाषा में गौड़ी रीति भी प्रयुक्त की है– **"गिरिशिखर तरुतटाट्टालकोपतल्पद्वारशरणोछ्रयविध्वंसिना युगनिधनसदृशपरमघोरवेगेन वायुना प्रमथितसलिलविक्षिप्तजर्जरीकृताव (यवं)..... क्षिप्ताश्मबृक्षगुल्मलताप्रतानमा नदीतलादित्युद्घाटितमासीत्.....।"**[6] यहाँ सुवर्णसिकता तथा पलाशिनी नदियों की बाढ़ के तीव्र वेग और प्रचण्ड वायु के झोंकों से गिरिशिखरों, वृक्षों एवं अ्टालिकाओं के विध्वंस तथा नदी के तटों पर फेंके गए पत्थरों, पेड़ों और झाड़ियों के वर्णन में गौड़ी रीतियुक्त ओजमयी सामासिक भाषा का प्रयोग देखा जा सकता है।

अभिलेख में छोटे–छोटे– सरल समासों के अतिरिक्त वर्ण्यविषय में लम्बे–लम्बे अथवा दीर्घ समासों का प्रयोग भी खूब हुआ है। यथा– अभिलेख के प्रारम्भ में ही सुदर्शन झील के वर्णन में सामाजिक दीर्घता बन पड़ी है, जो इस प्रकार है– **"मृत्तिकोपविस्तारायामोच्छ्रयनिःसन्धिबद्धदृढ़सर्वपाली– कत्वात्पर्वतपादप्रतिस्पर्धिसुश्लिष्टबन्धं....."**[7] इसी प्रकार महाक्षत्रप रुद्रदामन के वर्णन में तो और भी अधिक दीर्घ सामासिक शब्दावली का निबद्धन हुआ है; जहाँ चालीस अक्षरों से युक्त सत्रह शब्दों वाले तथा अन्य बहुत से शब्दों व अक्षरों से गुंथे हुए अतिदीर्घ समास बाणभट्ट की सामासिक शैली के समकक्ष बन गए हैं। अभिलेख का **".....णा गर्भात्प्रभृत्यविहतसमुदित– राजलक्ष्मीधारणागुणतः सर्ववर्णैरभि गम्य रक्षणार्थ पतित्वे वृतेना प्राणोच्छ्वासात्पुरुषवधनिवृत्तिकृतसत्यप्रतिज्ञेनान्यत्र संग्रामेष्वभिमुखागत– सदृशशत्रुप्रहरणवितरणत्वाविगुणरिपु..... धृतकारुण्येन स्वयमभिगतजनपदप्रणिपतितायुषशरणदेन दस्युव्यालमृगरोगादिभिरनुपसृष्ट– पूर्वगरनिगमजनपदानां**

वीर्यार्जितानामनुरक्तसर्वप्रकृतीनां पूर्वापराकरावन्त्य– नूपनीवृदानर्तसुराष्ट्रश्वभ्रमरुकच्छसिन्धुसौवीरकुकुरापरान्तनिषादादीनां.. ..... ।"[8] यह अंश तथा अन्यान्य कई स्थल दीर्घ सामासिक शब्दावली को दर्शाते हैं।

अलंकारों में कवि ने शब्दालंकार एवं अर्थालंकार – इन दोनों ही प्रकार के विभिन्न अलंकारों को अभिलेख में स्थान दिया है। शब्दालंकारों में अनुप्रास का प्रयोग सर्वाधिक हुआ है तथा उसमें भी पूरे–के–पूरे पद, पदांश और वर्णों की आवृत्ति देखी जा सकती है। अनुप्रास के वर्णानुप्रास नामक रूपभेद को यहाँ देखा जा सकता है– **"सुगृहीतनाम्नः स्वामिजयदाम्नः"** एवं **"अभ्यस्तनाम्नो रुद्रदाम्नो"**[9] में 'नाम्नः – दाम्नः' तथा **"महाक्षत्रपनाम्ना..... प्राप्तदाम्ना"**[10] में 'नामना–दाम्ना' की; **"अहरहर्दानमानानवमानशीलेन....."**[11] तथा **"नियुक्तेन पल्हवेन कुलैपपुत्रेणामात्येन सुविशाखेन"**[12] और **"शक्तेन दान्तेनाचपलेना– विस्मितेनार्येणाहार्येण"**[13] में वर्णों की आवृत्ति देखी जा सकती है। अतः वर्णानुप्रास है। पदांश आवृत्ति को **"न्यायाद्यानां विद्यानां महतीनां पारणधारण"**[14] एवं **"विधेयानां योधेयानां"**[15] पदों में देखा जा सकता है। पदावृत्ति **"कामाविषयाणां विषयाणां"**[16] तथा अन्य स्थलों– **"अवजित्यावजित्य"**[17], **"कोशान्महता.....अतिमहता"**[18] और **"मानोन्मान"**[19] इत्यादि कई स्थलों पर देखी जा सकती है। एक ही समस्त पद में स्वर एवं व्यञ्जन वर्णों की आवृत्ति बड़े ही कुशलतापूर्वक कर अनुप्रास की सुन्दर छटा बिखेरी गई है– **"गिरिशिखरतरुतटाट्टालकोपतल्प"** एवं **"प्रमथितसलिलविक्षिप्तजर्जरी..... ।"**[20]

अर्थालंकारों में उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग हुआ है। **"पर्वतपाद–प्रतिस्पर्धि"**[21] में उपमा अलंकार है; क्योंकि यहाँ सुदर्शन झील के बाँध की दीवार की तुलना दृढ़ता में पर्वत की समीपवर्ती पहाड़ियों से की गई है। **"मरुधन्वकल्प"**[22] पद में सुदर्शन झील में दरार पड़ने से उसका सारा पानी बह जाने के कारण झील की तुलना रेगिस्तान से की गई है, अतः यहाँ भी उपमा अलंकार की सृष्टि हुई है। **"सृष्टवृष्टिना पर्जन्येन एकार्णवभूतायामिव पृथिव्या"**[23] पंक्ति में अधिक वर्षा के कारण मानो समस्त पृथ्वी समुद्र के समान प्रतीत होती देखी गई– इस प्रकार यहाँ पृथ्वी की समुद्र के रूप में उत्प्रेक्षा की जाने के कारण उत्प्रेक्षा अलंकार की सृष्टि हुई है। **"अतिभृशं दुर्दर्शनम्"**[24] द्वारा कवि ने श्लेषालंकार की सृष्टि करने का प्रयास किया है।

अभिलेख के अध्ययन एवं परीक्षण से यह सम्यक्रूपेण ज्ञात होता है कि काव्यशास्त्रोचित आवश्यक एवं उत्कृष्टता विधायक तत्वों का सन्निवेश इसमें कवि ने अपनी कुशलता से किया है तथा वह काव्यशास्त्रीय तत्वों से भलीभाँति विज्ञ भी है; जिनकी आवश्यकता किसी भी उत्तमोत्तम प्रणयन हेतु होती है। क्योंकि कवि के परवर्ती काव्यशास्त्रियों और कवियों के द्वारा निर्धारित एवं प्रयुक्त अनेक काव्य शास्त्रीय तत्वों व गुणों का सन्निवेश व उनकी अभिव्यक्ति बहुत पूर्ववर्ती अभिलेख के इस लिपिक कवि ने की है। यथा– अपने 'काव्यादर्श' नामक ग्रन्थ में आचार्य दण्डी ने काव्य के दस गुणों– **"श्लेषः प्रसादः समता माधुर्य सुकुमारता। अर्थव्यक्तिरुदारत्वमोजः कान्तिसमाधय।।"** का नामशः निर्देश किया है। जबकि अभिलेख का लेखक बहुत पहले से ही इन सबसे परिचित है, तभी तो उसने इस अभिलेख में **"स्फुटलघुमधुर.....अलङ्कृतगद्यपद्य।"** इस अंश में स्फुट– अर्थ व्यक्ति, लघु– प्रसाद, मधुर–माधुर्य, चित्र– ओज और कान्त– कान्ति – इस प्रकार अभिलेख के लिपिक कवि और दण्डी के काव्यगुणों की समता देखी जा सकती है अर्थात् जिन काव्यगुणों को परवर्ती दण्डी ने बतलाया है, उनका कथन अभिलेख में रचयिता कवि ने पहले से ही कर रखा है। इससे सूचित होता है कि बाद में बने विभिन्न काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों व सम्प्रदायों और

काव्यशास्त्रज्ञ विद्वानों द्वारा विहित व निर्देशित काव्य शास्त्रीय तत्वों से लेखक पहले से भिज्ञ था। यह अभिलेख प्रशस्ति अपने समय में गद्य के विकास को सूचित करती है और साथ ही यह भी दर्शाती है कि संस्कृत भाषा एवं उसमें भी अलंकृत गद्य शैली ने विदेशी शासकों तक को प्रभावित किया, तभी तो महाक्षत्रप रुद्रदामन विदेशी–शकजातीय होते हुए भी संस्कृत भाषा से परिचित ही नहीं, वरन् काव्यगुणों का ज्ञाता एवं गद्य–पद्यात्मक काव्य – रचना में निपुण बतलाया गया है।

उपसंहार – रुद्रदामन के गिरिनगर (जूनागढ़) प्रस्तराभिलेख के अध्ययन–अनुशीलनोपरान्त यह स्पष्टतः देखा गया कि संस्कृत का आद्य उपलब्ध शिलालेख द्वितीय शताब्दी के मध्य भाग में किसी अज्ञात कवि द्वारा अलंकृत गद्य शैली में लिखा गया है। जिसमें संस्कृत की साहित्यिक सामग्री प्रचुरता एवं उत्कृष्टता के साथ प्राप्त होती है। रुद्रदामन द्वारा कराए गए सुदर्शन झील के जीर्णोद्धार की घटना को लेकर लिखे गए इस अभिलेख में कवि का ध्येय अपनी काव्य कुशलता या विद्वत्ता प्रदर्शित करना न होकर राजप्रशस्ति तथा घटना का उल्लेख करना था, तथापि कवि की काव्यमर्मज्ञता और काव्य निपुणता के कारण अभिलेख अलंकृत गद्य शैली का उत्कृष्ट नमूना बन गया है। समास बहुल शब्दावली, रीति, काव्यगुण, अलंकार तथा सरल प्रवाहमयी भाषा आदि–आदि का यथोचित सन्निवेश कवि ने इसमें किया है, जो अभिलेख को साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाता है। अभिलेख में प्रयुक्त साहित्यिक सामग्री और उसका श्रेष्ठ सन्निवेश तत्काल में संस्कृत गद्य के विकास और संस्कृत भाषा के प्रचलन के सूचक हैं। अतः ऐतिहासिक व राजनीतिक दृष्टि से महत्ता रखने वाले अभिलेख में इस प्रकार साहित्यिक सामग्री का निबद्धन अभिलेख को साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रचना बनाता है।

सन्दर्भ सूची –

1. देखें– (1) अभिलेख माला, 'रमा हिन्दी व्याख्योपेता', व्याख्याकार–झा बन्धु, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, भूमिका भाग, पृष्ठ 40–41 'अभिलेखों में प्रयुक्त भाषाएँ'।
   (2) प्राचीन भारतीय लिपि एवं अभिलेख : डॉ. गोपाल यादव, कला प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण – 2010
   (3) प्राचीन भारत का इतिहास : विद्याधर महाजन, एस चन्द एण्ड कम्पनी लि., संस्करण–2000, अध्याय–2, 'प्राचीन भारत के इतिहास के स्रोत'– "शिलालेख"।
2. अभिलेख मालान्तर्गत प्रथम अभिलेख– "गिरिनगरे रुद्रदाम्नः प्रस्तराभिलेखः", पृष्ठ 1–5
3. वही, भूमिका भाग, पृष्ठ–34 पर उल्लेखित एवं गूगल– https://toppersnotes-main.S3.ap-south.-1.amazonaws.com तथा https://hi.quora.com
4. अभिलेखमाला, गिरिनगर अभिलेख, पृष्ठ संख्या 1, संस्कृत गद्य पंक्ति 6–7
5. वही, पृष्ठ–4, संस्कृत गद्य पंक्ति 4–6
6. वही, पृष्ठ–1, संस्कृत गद्य पंक्ति 10–12
7. वही, पृष्ठ–1, संस्कृत गद्य पंक्ति 2
8. वही, पृष्ठ–2, संस्कृत गद्य पंक्ति 5–6 एवं पृष्ठ–3, संस्कृत गद्य पंक्ति 1–4
9. वही, पृष्ठ–1, संस्कृत गद्य पंक्ति 6–7
10. वही, पृष्ठ–4, संस्कृत गद्य पंक्ति 6
11. वही, पृष्ठ–4, संस्कृत गद्य पंक्ति 2

12. वही, पृष्ठ–5, संस्कृत गद्य पंक्ति 4
13. वही, पृष्ठ–5, संस्कृत गद्य पंक्ति 5–6
14. वही, पृष्ठ–3, संस्कृत गद्य पंक्ति 10
15. वही, पृष्ठ–3, संस्कृत गद्य पंक्ति 6
16. वही, पृष्ठ–3, संस्कृत गद्य पंक्ति 5
17. वही, पृष्ठ–3, संस्कृत गद्य पंक्ति 7
18. वही, पृष्ठ–4, संस्कृत गद्य पंक्ति 9
19. वही, पृष्ठ–4, संस्कृत गद्य पंक्ति 5
20. वही, पृष्ठ–1, संस्कृत गद्य पंक्ति 10–11
21. वही, पृष्ठ–1, संस्कृत गद्य पंक्ति 2–3
22. वही, पृष्ठ–1, संस्कृत गद्य पंक्ति 14
23. वही, पृष्ठ–1, संस्कृत गद्य पंक्ति 8
24. वही, पृष्ठ–1, संस्कृत गद्य पंक्ति 14